अच्छे संस्कार देने से अपने आप आता है सेवा का धर्म

– संगीता सक्सेना
प्राचार्य, डीपीएसजी, पालम विहार।

सेवा सबसे बड़ा धर्म होता है। सेवा की भावना इंसान में न हो तो माना जाता है कि वह पशु प्रवृत्ति वाला है। सेवा भाव के बारे में कवियों व विचारकों ने भी अपनी रचनाओं में स्थान दिया है, कि मनुष्य की प्रवृत्ति सेवा व परोपकार की होती है और जो सिर्फ अपने बारे में सोचता है उसे जानवर की श्रेणी में रखा जा सकता है, क्योंकि अपने बारे में सोचने की प्रवृत्ति पशुओं की होती है। इस कविता का यही मतलब था कि हम एक समाज में एक राष्ट्र में रहते है। ऐसे में हमें एक दूसरे के साथ जुड़कर रहना चाहिए। समय पड़ने पर एक दूसरे की सहायता व सेवा करनी चाहिए। हमें बच्चों को इन गुणों के बारे में बताना चाहिए। सेवा का धर्म बच्चों को अच्छे संस्कार देने से अपने आप आ जाता है।

अभिभावकों व शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के सामने स्वयं उदाहरण बनें और उन्हें दिखाएं कि सेवा क्या होती है। उन्हें सेवा पढ़ाकर नहीं सिखाई जा सकती है। बल्कि अपने आचरण में ढाल कर उन्हें दिखाना होता है कि यह सेवा होती है और इससे क्या लाभ होता है। घर में बड़ों की सेवा जब तक माता पिता नहीं करेंगे तब तक बच्चों को भी समझ में नहीं आएगा। ऐसे में बड़े बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए, ताकि बच्चा देखे व वह खुद सीखे कि सेवा क्या होती है।

दूसरों के लिए सेवा व समर्पण जीवन की सफलता का मूलमंत्र माना गया है। हमारे वेद पुराण, ग्रंथ उपनिषद इंसान को परहित में लगे रहने की सीख देते है। परोपकार को मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा गुण माना गया है। चाणक्य ने कहा है कि जिसके हृदय में सदा सेवा की भावना रहती है उनकी विपत्तियां नष्ट हो जाती है और संपत्तियां प्राप्त होती है। उनकी बात का यही मतलब था कि अगर समाज का हर व्यक्ति सेवा भाव वाला हो जाए तो समाज का स्वरूप बदला जा सकता है। कोई परेशान नहीं रहेगा और सभी एक दूसरे के साथ मिलकर चलेंगे। इससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकेगा। बच्चों में इस भावना को डालने के लिए उनके सामने उदाहरण पेश करने होंगे। शिक्षकों व अभिभावकों को अपने मन में सेवा की भावना रखकर काम करना होगा, ताकि विद्यार्थियों में भी इन गुणों का संचार किया जा सके। इस भावना को लेकर बड़े बड़ी कवियों व ग्रंथ रचयिताओं ने भी कहा है। उदाहरण भी दिए है। कवि कबीर दास ने कहा था कि पेड़ कभी अपने फलों को नहीं खाता और न नदी अपना पानी पीती है। इसका मतलब, उनमें दूसरों के प्रति की भावना होती है। इसलिए इंसान को नदी व वृक्ष के समान अपने आप को बनाना चाहिए, ताकि दूसरों की सहायता कर सकें। दूसरों की सहायता करके हम अपने जीवन को सफल बना सकते है। परोपकार ऐसा सदगुण है जिसे अपनाने से असीम सुकून व शांति का अहसास होता है। भागदौड़ भरे इस जीवन में लोग इस शब्द को भूल ही गए है। ऐसे में समाज विघटन की ओर अग्रसर हो रहा है। अगर भावी पीढ़ी में इन गुणों का संचार किया जाए तो निश्चित रूप से हम समाज का पुनर्निर्माण कर सकेंगे। इसकी आवश्यकता भी है। बच्चों में विभिन्न गतिविधियों व क्रियाकलापों के माध्यम से इस गुण को भरा जा सकता है। बच्चों में एक दूसरे के परस्पर सहयोग की भावना को भरने से ईर्ष्या जैसी चीजों को जड़ से निकाल कर फेंका जा सकता है। जीवन में इस गुण को अपना कर अपने जीवन के साथ साथ दूसरों के जीवन में भी सकारात्मकता का संचार किया जा सकता है। इसी सकारात्मक परिवेश व माहौल से सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचा जा सकता है। ऐसे में हमें जीवन पर्यंत परोपकार का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। समाजसेवा के माध्यम से समाज के तमाम वर्ग की दूरी को पाटा जा सकता है। माता पिता व शिक्षकों से संयुक्त प्रयासों से बच्चों में इन गुणों का संचार आसानी से किया जा सकता है।

सिर्फ किताबी शिक्षा से बच्चों में यह गुण पैदा करना कतई संभव नहीं है। ज्यादातर चीजें बच्चे अपने परिवार, शिक्षक और समाज को देख कर ही सीखते है। सबके प्रति सेवा भाव रखने की भावना एक ऐसा गुण है, जो इंसान को अन्य प्राणियों से पूरी तरह अलग करता है। ईश्वर ने इंसान को अन्य प्राणियों से पूरी तरह अलग बनाया है, इसलिए इंसान को मानवता के आधार वाले इस गुण अपनाना होगा। इंसान को परिवार और समाज के हित में अपने अंदर सेवा भाव का गुण अवश्य रखना चाहिए। उत्कृष्ट समाज की स्थापना करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में सेवा भाव की भावना होना जरूरी है। हम चाहे जिस क्षेत्र में भी काम कर रहे हों, लेकिन इस गुण को जरूर अपनाना चाहिए। इस गुण को अपना कर ही एक आदर्श समाज की श्रृंखला बनाई जा सकती है, इसलिए व्यक्ति को सबसे पहले खुद को बदल कर इस गुण को अपनाना होगा। इस गुण को शुरू से ही अपना कर समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर किया जा सकता है। परोपकार, सेवा और दूसरे के प्रति आदर कुछ ऐसे गुण है जो धरती पर इंसान को वरदान के रूप में मिले हैं, लेकिन आज के समय में देखे तो हर कोई मशीनी होता जा रहा है। इंसान अपने व्यवहार से इस गुण को अपने से कोसों दूर करता जा रहा है, जबकि समाज में रहकर अपने याद रखना चाहिए की मानवता ही इंसान की सबसे बड़ी पूंजी है। यहीं हमारे समाज का सबसे बड़ा आधार है।

करें आपसी सहयोग

हमे एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए व बड़ों तथा कमजोर वर्ग की सेवा करनी चाहिए। ऐसा करके हम किसी के जीवन में खुशी भर सकते है। हमारी थोड़ी से मदद से किसी को खुशी व सहायता मिल जाए तो हमें भी अच्छा महसूस होगा।

– आदर्श द्विवेदी, कक्षा 12, डीपीएसजी, पालम विहार।

किसी को न करें दुखी

कभी किसी को चोट नहीं पहुंचानी चाहिए। किसी को दुखी करने से अपना मन भी दुखी होता है। समाज मे ऐसे कई लोग है जिनके पास संसाधन नहीं है ऐसे मे हमे उनकी मदद करनी चाहिए। समाजसेवा में अपने आप को लगाना चाहिए।

–निक्की त्यागी, कक्षा 11 डीपीएसजी, पालम विहार।

सेवा से मिलती है खुशी

कभी भी किसी की सेवा करने से हमे खुशी मिलती है। किसी को हमारी मदद व सेवा की जरूरत है तो उसकी मदद करनी चाहिए। इससे हमारा व्यक्तित्व भी अच्छा माना जाता है। परोपकार में सबसे बड़ा सुख छुपा हुआ है।

–तनिका यादव, कक्षा 12, डीपीएसजी, पालम विहार।